

CHANAKYA INSTITUTE

Add: In Front Of Vivekanand Ashram, Ramkund, Raipur (C.G.)

Mob : 9752159138, 9753414551

CLASSES AVAILABLE

6th to 10th
All Subject

11th & 12th
Commerce, Bio, Maths

B.Com

M.Com

BBA

Bsc

Msc

DCA

PGDCA

CA-CPT

**Main Branch : In Front Of Vivekanand Ashram, Ramkund
Raipur (C.G.) Contact No. : 9752159138, 9753414551**

**1st Branch : Behind Raipura Talab, Ganesh Nagra, Satyam Vihar
Colony, Raipura, Raipur (C.G.)
Contact No. : 9752159138, 9753414551**

**2nd Branch : OPENING SHORTLY in Krishna Nagar, Ram Nagar
Raipur (C.G.) Contact No. : 9752159138, 9753414551**

Facilities

1. 2100 से अधिक संतुष्ट छात्र छात्राएं
2. न्यूनतम फीस में उच्चतम शिक्षा
3. प्रतिवर्ष पिकनिक प्रोग्राम
4. फ्री कैरिअर गाइड लाइन

5. प्रतिवर्ष 100 रिजल्ट
6. परीक्षा के समय 8 से 10 घण्टे की विशेष क्लास
7. मासिक टेस्ट सीरीज
8. विगत 7 वर्षों से आप के सेवा में....

HANAKYA

The Study Institute

6th to 12th
ALL SUBJECT
(CG, CBSE Board)

B.Com, M.Com
B.Sc, M.Sc

Result 2019-20



Result 2018-19



Address-
In Front Of Vivekanand Ashram
Ramkund, Raipur (C.G.)



Contact-
97521-59138
97534-14551

Result 2017-18



(1) मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।

(पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. बी.ए. 2012, 16, बी.कॉम. 2016;
सरगुजा वि.वि. बी.कॉम. 2016; बिलासपुर वि.वि. बी.कॉम. 2018)

पल्लवन—व्यक्ति वास्तव में मन के कारण हारता है और मन के कारण ही जीतता है। सुख-दुःख, आशा-निराशा, हानि-लाभ तो जीवन में लगे ही रहते हैं। व्यक्ति को चाहिए कि निराशा या कष्ट के क्षणों में भी कभी भी अपने मन को पराजित न होने दे। अवसाद के क्षणों में उसे धैर्य से काम लेना चाहिए और हर हालात में विजय के लिए प्रयास करते रहना चाहिए। वास्तव में हारता वही है जो मन से हार मान लेता है और जीतता वही है जिसका मन कभी हार नहीं मानता। एक बार असफलता मिलने पर दुगुने उत्साह से भरकर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने वाले व्यक्ति अन्ततः अपना लक्ष्य हासिल कर ही लेते हैं।

प्रश्न 6. 'ईदगाह' कहानी का मुख्य पात्र कौन है ? उसके चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर- 'ईदगाह' कहानी का मुख्य पात्र हामिद है । वह चार-पाँच साल का गरीब, दुबला-पतला लड़का, जिसके माता-पिता भी इस दुनिया में नहीं हैं, उसके पास केवल तीन पैसा ही है, फिर भी वह सबसे अधिक प्रसन्न है । यह उसकी चारित्रिक विशेषता है । हामिद के अन्य चारित्रिक विशेषताएँ अग्रलिखित हैं -

1. त्याग - उसमें त्याग की भावना प्रबल है । वह मिठाइयाँ व खिलौने देखकर ललचाता है परंतु उन्हें नहीं खरीदता । इच्छाओं का दमन करके वह अपनी दादी की खुशियों के लिए चिमटा खरीदना ही उचित समझता है ।

56 | R-प्रथम वर्ष, आधार पाठ्यक्रम

2. **सद्भाव** - हामिद के मन में सद्भाव है। वह सद्भाव के कारण ही अपनी दादी अमीना के विषय में, उसके उँगलियों के जलने के विषय में सोचा तथा उनके दुःखों के निवारण हेतु कम पैसा होने के बावजूद चिमटा ही खरीदा।

3. **स्नेह** - चार-पाँच वर्षीय बालक हामिद का हृदय स्नेह भाव से ओत-प्रोत है। वह अपनी बूढ़ी दादी अम्मी से स्नेह करता है। उसके दुःख को देखकर वह सहन नहीं कर सका। इसी कारण लोहे का बना चिमटा खरीदा जिससे दादी के हाथ की उँगलियाँ रोटी बनाते समय न जलें।

4. **सद्विवेक** - हामिद अल्पायु अवश्य है। परंतु उसके पास सद्विवेक है। उसके साथी महमूद, नूरे, मोहसिन तथा सम्मी नाना प्रकार के खिलौने खरीदे, जो कुछ समय बाद टूट कर नष्ट हो गए। हामिद ने लोहे का बना चिमटा खरीदा। उसका तर्क था कि उसे कितनी बार जमीन पर पटके फिर भी वह चिमटा नहीं टूटेगा।

52. दिन फिरना = अच्छा समय आना ।

(पं.रविशंकर शुक्ल वि.वि. बी.ए. 2012)

बस्तर वि.वि. बी.ए. 2019

प्रयोग—राम ने बड़े दुःख उठाये, अब इंजीनियर हो गया है, अब तो उसके दिन फिर गये ।

53. एक जमाना = पुराना दालना उठा जमाना ।

प्रयोग—भारत का विकास पाकिस्तान की आखा में खटकता रहता है।
12. आँचल पसारना = भीख माँगना। (पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. बस्तर वि.वि. बी.एस-सी. 2019; दुर्ग वि.वि.)

प्रयोग—माँ ने बच्चे की बीमारी पर भगवान से आँचल पसारकर भीख माँगी।

स कामना है।

प्रश्न 14. भारत वंदना के भाव को अपने शब्दों में लिखिए।

(बिलासपुर वि.वि. बी.ए. 2020; दुर्ग वि.वि. बी.ए. 2020)

उत्तर— भारत वंदना में श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी ने जो भाव व्यक्त किए हैं उनके अनुसार भारत की स्वतंत्रता के लिए श्री निराला जी लालायित हैं और अपनी श्रद्धा भारत माँ भारती के श्री चरणों में समर्पित करते हैं। वे जनता से आह्वान करते हैं कि हमें माँ भारती के अर्थात् भारत माता के चरणों में उसकी स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ जान के तन, मन, धन, सर्वत्र, सर्वस्व न्यौछावर कर देना चाहिए। इसका भाव यह है कि निराला जी भारत माता की स्वतंत्रता के लिए बड़े ही लालायित हैं, उत्सुक हैं और भारत माता की पराधीनता के लिए पीड़ित हैं, जिसके लिए उन्होंने हर व्यक्ति से आह्वान किया है कि वे उसको अपने कर्मों से, अपने शरीर से, वचन से, मन से जो जिस तरह की भी सहायता कर सकता है, माँ भारती को स्वतंत्र कराने में सहयोग दें।

प्रश्न 15. 'भारत वंदना' कविता की निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ समझाइए।

संक्षेपण का अर्थ

उत्तर—

लिपिबद्ध विस्तृत विवरण अथवा वक्तव्य या लेख में निहित तथ्यों के संयोजन और क्रमबद्ध लेखन को संक्षेपण अथवा संक्षेपिका कहा जाता है। यह मूल लेख का अनुलेखन है।

संक्षेपण की परिभाषा

किसी विस्तृत विवरण, सविस्तार, व्याख्या, वक्तव्य, पत्र व्यवहार या लेख के तथ्यों और निर्देशों के ऐसे संयोजन को 'संक्षेपण' कहते हैं, जिसमें अप्रासंगिक, असम्बद्ध, पुनरावृत्त, अनावश्यक बातों का त्याग और सभी अनिवार्य, उपयोगी तथा मूल तथ्यों का प्रवाहपूर्ण संक्षिप्त संकलन हो।

इस परिभाषा के अनुसार, संक्षेपण एक स्वतः रचना है। उसे पढ़ लेने के बाद मूल सन्दर्भ को पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। सामान्यतः संक्षेपण में लम्बे-चौड़े विवरण, पत्राचार आदि की सारी बातों को अत्यन्त संक्षिप्त और क्रमबद्ध रूप में रखा जाता है। इसमें हम कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक विचारों, भावों और तथ्यों को प्रस्तुत करते हैं। वस्तुतः संक्षेपण किसी बड़े ग्रन्थ का संक्षिप्त संस्करण, बड़ी मूर्ति का लघु अंकन और बड़े चित्र का छोटा चित्रण है। इसमें मूल की कोई भी आवश्यक बात छूटने नहीं पाती। अनावश्यक बातें छँटकर निकाल दी जाती हैं और मूल बातें रख ली जाती हैं। यह काम सरल नहीं। इसके लिए निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है।

संक्षेपण का महत्व

सभ्यता और संस्कृति की अतिशय भौतिकवादिता और विज्ञान की प्रगति के कारण वर्तमान समय में मनुष्य का जीवन इतना व्यस्त हो गया है कि उसको सर्वदा समय का अभाव कचोटता रहता है। संक्षेपण के द्वारा समय की बचत की जा सकती है। लम्बे आख्यान, ग्रन्थ, विवरण या लेख को पढ़ने के लिये जितने समय की आवश्यकता पड़ती है, संक्षेपण के माध्यम से उसकी बचत हो सकती है और हम थोड़े समय में मूल कृति का अभिप्राय समझ अथवा जान सकते हैं। इसलिये यह व्यावहारिक और शैक्षणिक दोनों दृष्टियों से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है।

संक्षेपण की उपयोगिता

(1) **संक्षेपण की व्यावहारिक उपयोगिता**—संक्षेपण के द्वारा मूल रचना बिखरे सत्य, भाव या विचारों को सुनियोजित ढंग से श्रोता या पाठक के समक्ष उपस्थित कर दिया जाता है अतः यह कहना उपयुक्त होगा कि यह कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक सत्यों को प्रस्तुत करता है और उसका अवलोकन करके हम मूल सन्दर्भ से सुपरिचित हो जाते हैं। लम्बे कथानक, वक्तव्य और लेख को पढ़ने तथा उसमें निहित सत्य को एकत्र करने के लिये जिस समय की आवश्यकता पड़ती है, संक्षेपण उसे थोड़े समय में ही पूरा कर देता है। अतः इसके माध्यम से अध्यापक का अध्यापन, वकील की वकालत, न्यायाधीश को न्याय, अधिकारी का कार्य, व्यापारी का व्यवसाय कम समय में पूरा हो जाता है। इसलिये व्यावहारिक जीवन में संक्षेपण को अत्यन्त ही उपयोगी कहा जा सकता है।

(2) **संक्षेपण की शैक्षणिक उपयोगिता**—संक्षेपण एक प्रकार से मानसिक प्रशिक्षण है। इसके कारण लेखन, पठन-पाठन में सरलता होती है। स्वच्छता और प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से सहायता मिलती है। यह एकाग्रता मनोयोग और दृढ़ता की सामर्थ्य को उद्दीप्त करता है। इसके माध्यम से

(ख) भोलाराम का जीव (व्यंग्य)

प्रश्न 1. 'भोलाराम का जीव' में व्यंग्य के माध्यम से किस समस्या पर कटाक्ष किया गया है ?
अथवा (दुर्ग वि.वि. बी.ए. 2020)

'भोलाराम का जीव' में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।
अथवा (पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. बी.ए. 2020)

'भोलाराम का जीव' कहानी के माध्यम से लेखक ने किन पर व्यंग्य किया है ?

उत्तर— लेखक हरिशंकर परसाई ने इस कहानी के माध्यम से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है। भोलाराम शासकीय सेवा से निवृत्त हो गया परंतु उसके पेंशन की फाइल पर कोई कार्यवाही इसलिए नहीं की गई क्योंकि वह घूस देने में असमर्थ था। घूस न देने के कारण उसे तथा उसके परिवार को पेंशन नहीं मिला और वह गरीबी का शिकार हो गया। मरणोपरान्त उसकी आत्मा को भी मुक्ति नहीं मिली। उसका जीव पेंशन की फाइल में ही जाकर अटक गया था।

भी है।

प्रश्न 4. सूचना प्रौद्योगिकी के घटकों का वर्णन कीजिए। (दुर्ग वि.वि. बी.ए. 2018, 20;
बिलासपुर वि.वि. बी.कॉम 2018; पं. रविशंकर वि.वि. बी.एस-सी. 2018,
बी.ए. 2019; सरगुजा वि.वि.बी.एस-सी. 2019)

अथवा

सूचना प्रौद्योगिकी के स्वरूप व प्रभाव का परिचय दीजिए।

अथवा

(बिलासपुर वि.वि. बी.कॉम. 2018)

सूचना प्रौद्योगिकी के घटक लिखिए। (सरगुजा वि.वि. बी.ए. 2018; बस्तर वि.वि. बी.ए. 2018;

अथवा

दुर्ग वि.वि. बी.एस-सी. 2018)

सूचना प्रौद्योगिकी के घटकों—सूचना, टेक्नोलॉजी और भाषा के सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी
लिखिए। (बस्तर वि.वि. बी. ए. 2017)

अथवा

कम्प्यूटर और शब्दावली। (सरगुजा वि.वि. बी.ए. 2012; बिलासपुर वि.वि. बी.कॉम. 2015)

उत्तर—सूचना टेक्नोलॉजी के दो प्रमुख घटक हैं—सूचना और टेक्नोलॉजी। लेकिन भारत के
सन्दर्भ में इसका एक तीसरा घटक भी है—भाषा। चूँकि भारत में अंग्रेजी समझने वालों की संख्या
केवल 5 प्रतिशत है और यहाँ 18 प्रमुख मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं। अतः भाषा घटक महत्वपूर्ण हो जाता है।

1. सूचना घटक—सूचना से तात्पर्य उस कथन सामग्री से है जो हमें इंटरनेट या वैब के माध्यम
से प्राप्त होती है। इंटरनेट की सूचनाएँ दो प्रकार की होती हैं—**सामान्य सूचना और ज्ञानात्मक सूचना**।
सामान्य सूचनाएँ प्रायः तात्कालिक महत्व की होती हैं; जैसे—व्यापारिक, वाणिज्यिक, व्यावसायिक,
राजनीतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत सूचनाएँ। **ज्ञानात्मक सूचनाओं** का सम्बन्ध ज्ञान-विज्ञान के
विभिन्न क्षेत्रों या अनुशासनों से होता है। ज्ञानात्मक सूचनाएँ अधिक स्थायी प्रकृति की होती हैं और
उनका उपयोग प्रायः सदर्थ ग्रन्थ की तरह होता है; जैसे—ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धी जानकारी, शब्दकोश,
विश्वकोश, थिसॉरस, साहित्य, इतिहास भूगोल आदि।

स्थायित्व की दृष्टि से सूचनाएँ दो प्रकार की होती हैं—स्थिर (स्टैटिक) और परिवर्तनशील (डाइनेमिक)। स्थिर सूचनाएँ काफी समय तक इंटरनेट में उसी रूप में बनी रहती हैं क्योंकि उनमें बार-बार परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं पड़ती; जैसे—साहित्य, ज्ञान-विज्ञान, इतिहास, विश्वकोश, शब्दकोश आदि से सम्बन्धित जानकारी। परिवर्तनशील सूचनाएँ वे हैं जिन्हें हर कुछ मिनटों, घंटों, दिनों या महीनों में उद्यत करते रहने की जरूरत पड़ती है; जैसे—समाचार, विमान आगमन-प्रस्थान, खेल कमेंट्री, क्रय-विक्रय, विज्ञान आदि।

इंटरनेट में तीन पक्षों पर ध्यान देना जरूरी है—चयन, प्रस्तुतीकरण और भाषा-शैली। सामग्री के चयन में प्रयोक्ताओं को ध्यान में रखा जाता है। उदाहरण के लिये, बिल क्विंटन-मोनिका कांड या तहलका विवाद सामयिक महत्व के मुद्दे थे, जिन पर इंटरनेट के प्रयोक्ताओं की रुचि अपनी चरम सीमा पर थी।

इंटरनेट में सूचना सामग्री के प्रस्तुतीकरण की अपनी एक पद्धति है। इंटरनेट में सूचना कई स्तरों पर और कई विकल्पों के जरिए प्रस्तुत की जाती है। पर्दे पर विषय का एक संक्षिप्त परिचय आता है। अक्सर इसी पृष्ठ के नीचे MORE नामक एक बटन होता है जिसे दबाने पर उस विषय से सम्बन्धित अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत जानकारी पर्दे पर आ जाती है। इकाई बार बटन अन्य विषयों का संकेत देते हैं। कई बार ये सूचनाएँ हाइपरटेक्स्ट के फॉर्मेट में एक नेटवर्क की तरह अन्य सूचनाओं के चिह्नित शब्दों से भी परस्पर जुड़ी रहती हैं जिससे किसी भी टेक्स्ट में आए इन चिह्नित शब्दों पर क्लिक करने से ही उनसे सम्बद्ध सूचना का पृष्ठ स्वतः खुल जाता है।

2. टेक्नोलॉजी घटक—इंटरनेट सूचना को एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचाने का माध्यम है। इनमें कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोडेम, स्केनर, वीडियो, कैमरा, साउंड कार्ड, टेलीफोन, प्रिंटर, सर्वर, सैटेलाइट आदि शामिल हैं। जिसके फलस्वरूप कई नई सुविधाएँ उपलब्ध हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, इंटरनेट को सीधे टीवी के पर्दे पर देखना सम्भव हो सकेगा, मोबाइल के भीतर ही इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध हो जाएगी और वायरलेस टेक्नोलॉजी से केबल के बिना भी इंटरनेट सम्भव हो सकेगा।

3. भाषा-घटक—भाषा सूचना प्रौद्योगिकी का मुखपृष्ठ है जिसकी सहायता से प्रयोक्ता पर्दे पर अंकित सूचना को ग्रहण करता है। आज इंटरनेट की 83 प्रतिशत सामग्री अंग्रेजी में उपलब्ध है।

सूचना प्रौद्योगिकी को प्रायः सामाजिक विकास और जन-कल्याण के उद्देश्यों के साथ जोड़ा जाता है, इसलिये भारत के संदर्भ में यह आवश्यक है कि इंटरनेट की कथ्य सामग्री लोगों तक भारतीय भाषाओं के माध्यम से पहुँचे। इस सम्बन्ध में दो समाधानों को प्रायः उल्लेख किया जाता है, भाषा का स्थानीयकरण और टेक्नोलॉजी का विस्तारीकरण। स्थानीयकरण का तात्पर्य है कम्प्यूटर परिवेश और इंटरनेट की कथ्य सामग्री भी हिन्दी भाषा में उपलब्ध होगी। इस सामग्री को भारतीय भाषाओं में लाने के लिए अनुवाद का उपयोग किया गया है।

प्रश्न 5 सूचना प्रौद्योगिकी क्या है ? स्पष्ट कीजिए।

उसके द्वारा बजाया गया, उसमें नई शक्ति एवं चेतना जागृत करने और सकारात्मकता का संचार करने का कार्य किया।

प्रश्न 14. 'शिकागो व्याख्यान' पाठ का भाव, सारांश लिखिए। (बिलासपुर वि.वि. बी.ए. 2020)
अथवा

'शिकागो से स्वामी विवेकानन्द का पत्र' पाठ का सारांश लिखिए।

(पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. बी.ए. 2020)

उत्तर— शिकागो व्याख्यान से स्वामी जी ने बजाया आध्यात्म का डंका। स्वामी जी युवाओं के प्रेरणाश्रोत रहे विशेषकर भारतीय युवाओं के लिए तो भारतीय नवजागरण का अग्रदूत उनसे बढ़कर अन्य कोई नेता नहीं हो सकता। स्वामी विवेकानन्द जी ने 11 सितम्बर, 1893 को शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दु धर्म पर अपने प्रेरणात्मक भाषण की शुरुआत 'मेरे अमेरिकी भाईयों और बहनों' के साथ की जिससे उनका जोरदार स्वागत हुआ। युवाओं की अहम भावना को खत्म करने के उद्देश्य से उन्होंने ओजस्वी भाषण में युवा शक्ति का आह्वान करते हुए अनेक मूलमंत्र दिये जिससे वह सदैव के लिए युवाओं के प्रेरणाश्रोत बने रहे।



माना जाता है। इस आधार पर मानक भाषा की परिभाषा निम्नानुसार दी जा सकती है—
परिभाषा—‘मानक-भाषा’ किसी भाषा के उस रूप को कहते हैं, जो उस भाषा के पूरे क्षेत्र में शुद्ध माना जाता है तथा जिसे उस प्रदेश का शिक्षित और शिष्ट समाज अपनी भाषा का आदर्श रूप मानता है और प्रायः सभी औपचारिक स्थितियों, लेखन में, प्रशासन और शिक्षा के माध्यम के रूप में यथासाध्य उसी का प्रयोग करता है।”

मानक हिन्दी भाषा या मानक भाषा के लक्षण एवं विशेषताएँ—भाषा वैज्ञानिकों ने मानक भाषा के अनेक लक्षण बतलाये हैं। उनमें से प्रमुख ये हैं—

1. मानक भाषा में मानक शब्दों का प्रयोग होता है।
2. मानक भाषा व्याकरण सम्मत होता है।
3. मानक भाषा के उच्चारण और लेखन शुद्ध होते हैं और उसमें अशुद्धियाँ नहीं होती हैं।
4. मानक भाषा अपने क्षेत्र में सर्वमान्य भाषा होती है।
5. औपचारिक अवसरों पर मानक भाषा का ही प्रयोग होता है।
6. शिक्षा के माध्यम के रूप में मानक भाषा का ही प्रयोग किया जाता है। इसमें विज्ञान, वाणिज्य और कला की शिक्षा दी जाती है।
7. यह राज्य की अधिकृत भाषा होती है। प्रशासन के कार्यों में इसका प्रयोग किया जाता है।
8. पत्र-पत्रिकाओं, समाचार-प्रसारण, अनुवाद आदि में इसी भाषा का प्रयोग होता है।
9. मानक भाषा के अन्तर्गत अनेक बोलियाँ होती हैं।
10. इसे सामाजिक मान्यता प्राप्त होती है।
11. सभ्य और सुसंस्कृत लोग इस भाषा का प्रयोग करते हैं।
12. मानक भाषा में शोध एवं अनुसंधान कार्य किये जाते हैं।
13. इस भाषा का प्रयोग साहित्यिक रचना, पत्र व्यवहार आदि में होता है। दैनिक समाचार-पत्र, मासिक-पत्र, पाठ्यपुस्तकों आदि में भी इसी भाषा का प्रयोग होता है। उपन्यास, कहानी, नाटक, इसी भाषा में लिखे जाते हैं।
14. आन्दोलनों, चुनाव प्रचारों, धार्मिक एवं सामाजिक सम्मेलनों, साहित्यिक गोष्ठियों, राजनीतिक सभाओं आदि के अवसरों पर विविध प्रान्तों एवं देशों के शिक्षित एवं सभ्य व्यक्ति मानक भाषा का प्रयोग करते हैं।

15. मानक भाषा में अभिधा शब्द-शक्ति का अधिक से अधिक प्रयोग होता है।
16. इस भाषा में कार्यालयीन रूप में कर्मवाच्य की प्रधानता होती है; जैसे—कार्यवाही की जाए।
(न कि—आप 'कार्रवाई करें।')
17. मानक भाषा न तो स्थिर होती है न सतत् विकासशील। उसमें स्थिरता और विकासशीलता के बीच एक प्रकार का साम्य तथा सदा परिवर्तन लक्षित होता है।
18. मानक भाषा ही राष्ट्रभाषा का आसन ग्रहण करती है। इस प्रकार हिन्दी एक मानक भाषा है और राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन है।

यदि हम उपर्युक्त लक्षणों के आधार पर हिन्दी-भाषा का विवेचन करें, तो हम पायेंगे कि मानक हिन्दी भाषा में उक्त सभी लक्षण विद्यमान हैं। मानक हिन्दी में मानक शब्दों का प्रयोग होता है। मानक हिन्दी व्याकरण-सम्मत है। यह उच्चारण तथा लेखन की अशुद्धियों से मुक्त है। यह सर्वमान्य, सुनिश्चित तथा सुनिर्धारित है। यह राजभाषा पद पर प्रतिष्ठित है। सभी प्रतिष्ठित जन औपचारिक अवसरों पर इसी का प्रयोग करते हैं। समाचार-पत्र, पत्रिकाओं, समाचार प्रसारण, अधिकृत अनुवाद, शिक्षा व अनुसन्धान के कार्यों के लिए लोग इसी का प्रयोग करते हैं।

हिन्दी भाषा में ऐतिहासिकता, मानकीकरण, जीवन्तता और स्वयत्तता—ये चारों तत्त्व विद्यमान हैं। हिन्दी का एक गौरवशाली इतिहास है। इसकी विपुल साहित्यिक परम्परा है। शताब्दियों से लोग हिन्दी भाषा का प्रयोग करते आ रहे हैं। राष्ट्रीय आन्दोलन के समय से ही हिन्दी का मानक स्वरूप विकसित होने लगा था और तो हिन्दी का मानक स्वरूप सुनिश्चित तथा सुनिर्धारित हो गया है।

मानक हिन्दी में जीवन्तता और स्वायत्तता के गुण भी विद्यमान हैं। इसकी जीवन्तता इस तथ्य से सिद्ध होती है कि प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. जयन्त नारलीकर ने 'ब्रह्माण्ड के रहस्य' पर अपना व्याख्यान मानक हिन्दी-भाषा में दिया है। कविता और कहानी से लेकर विज्ञान और दर्शन तक सभी क्षेत्रों में आज मानक हिन्दी भाषा का प्रयोग होता है। इसका अपना अस्तित्व है। वह किसी अन्य भाषा के ऊपर टिकी हुई नहीं है। उसकी स्वतन्त्र शब्दावली एवं वृहत् शब्दकोष है और अपना व्याकरण है।

अतः उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि हिन्दी-भाषा में मानक-भाषा के सभी लक्षण विद्यमान हैं। मानक हिन्दी भाषा एक सशक्त, एक गतिशील और एक सर्वमान्य भाषा है।

मानक-भाषा का उदाहरण—हिन्दी का खड़ी बोली रूप मानक भाषा अथवा मानक हिन्दी भाषा में

अथवा

सामाजिक गतिशीलता किसे कहते हैं ?

उत्तर— मानव समाज में आन्तरिक तथा बाह्य कारणों से होने वाले परिवर्तन ही सामाजिक गतिशीलता कहलाते हैं। समाज में सतत् परिवर्तन होने रहते हैं। एक युग के बाद दूसरे युग का आगमन होता है। समाज में संस्कृति का विकास भी होता है जो गतिशीलता का ही रूप है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। गतिशीलता स्वाभाविक प्रक्रिया है। हमारे भारतीय समाज में अनेक बार विदेशी आक्रान्ताओं ने संस्कृति को प्रभावित करने का प्रयास किया परन्तु भारतीय समाज ने उनको आत्मसात करके अपने मूल पहचान को बनाये रखा।

प्रश्न १ सामाजिक गतिशीलता में प्राचीनकाल के विविध परिस्थितियों की विवेचना कीजिए।

दिया।

प्राचीनकाल में आध्यात्मिकता के क्षेत्र में भी सामाजिक गतिशीलता भारतीय समाज में दृष्टिगोचर होता है। यह वेदों तथा पुराणों का युग था। हमारे भारतीय संस्कृति के मुख्य पहचान थे - वर्ण, आश्रम तथा यहाँ के संस्कार जो संपूर्ण विश्व में विख्यात थे। नैतिकता ही लोगों के जीवन का लक्ष्य था। कर्त्तव्य पालन ही जीवन का सर्वोत्कृष्ट मार्ग था। परहित एवं लोक कल्याण की भावना जन-जन के मानस में विद्यमान थी।

मध्यकाल तो भारतीय समाज के पतन का काल था। मध्यकालीन भारत में संपूर्ण जाति की सामूहिक गतिशीलता की अपेक्षा पारिवारिक गतिशीलता के अधिक प्रयास किये गये। इस काल में राजपूत राजाओं का आधिपत्य स्थापित हुआ। इतिहासकारों का मानना है कि महापद्म राजा राम मोहनराय इसके सूत्रधार थे। सतीप्रथा, बाल-विवाह जैसे कुप्रथाओं को समाप्त किया गया। भारतीय समाज में परिवर्तन की लहरें हिलोरें मारने लगीं तथा नई भारतीय समाज व्यवस्था विकसित हुई।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सामाजिक गतिशीलता की गति और भी तेज हो गई है। भारत में प्रजातन्त्र की स्थापना, जो समानता, स्वतंत्रता और सार्वभौमिक मताधिकार पर आधारित है, ने भारतीय समाज के परम्परागत ढाँचे में परिवर्तन के द्वार खोल दिये हैं। औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं राजनीतिक की प्रक्रियाओं ने सामाजिक गतिशीलता की मात्रा और अवसरों को बढ़ा दिया है। परम्परागत भारतीय समाज में सांस्कारिक स्थिति (Ritual Status), आर्थिक स्थिति (Economic Status) तथा शक्ति स्थिति (Power Status) समायोजित रूप में थे अर्थात् जो सांस्कारिक दृष्टि से ऊँची स्थिति में था वह आर्थिक और शक्ति की दृष्टि से भी ऊँची स्थिति में था। योगेन्द्र सिंह (Yogendra Singh) ने सही ही लिखा है कि सामाजिक विधान, शिक्षा, औद्योगीकरण, जनतन्त्रीकरण, नगरीकरण के प्रभावों से शक्ति, अर्थ और सांस्कारिक उच्चता का यह समायोजन अब टूटने लगा है।

आधुनिक काल में अब जातियाँ संगठित होने लगी हैं। जाति संघ एवं महासंघ का भी निर्माण होने लगा है। हार्डग्रेव (Hardgrave), कोठारी (Kothari), रुडोल्फ तथा रुडोल्फ (Rudolph and Rudolph) और श्रीनिवास (Srinivas) के अध्ययनों ने एक और महत्वपूर्ण सामाजिक गतिशीलता की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। भारत में अनेक क्षेत्रों में जाति-संघों (Caste association) का निर्माण हो रहा है जो चेतनापूर्ण प्रयासों द्वारा सामूहिक रूप से बढ़ती गतिशीलता की ओर अग्रसर है। जाति-संघ राजनीति के साथ गठबन्धन द्वारा जाति हितों की पूर्ति करने में सक्रिय हैं। इतना ही नहीं कहीं-कहीं जातियों के महासंघ (Federations) भी बन रहे हैं। उनमें से अधिकांश जातियाँ जो पहले अलग-अलग थी एक ही मंच पर एकत्रित हो रही हैं। एम. एन. श्रीनिवास ने उचित ही लिखा है कि भूतकाल में जातियों के एक-दूसरे से अलग होने की प्रक्रिया ज्यादा तीव्र थी और अब एक-दूसरे से जुड़ने की प्रक्रिया अधिक तीव्र है।

भारतीय समाज में गतिशीलता जटिल रूप में प्रकट हो रही है।